IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कालजयी कृतियों में सीता का दिव्यादिव्य चरित्र: एक समीक्षण

डॉ० ऋचा रानी (शिक्षिका)

द्वारा श्री लक्ष्मण झा

कैलाशपुरी, वार्ड न०- ०९, रोड न०-०१

डुमरा, जिला- सीतामढ़ी, पिन कोड- ८४३३०१

"जनकनंदिनी जानकी का नाम ज्यों ही हमारे श्रवण को रससिक्त बनाता है, त्यों ही हमारे लोचनों के सामने अलोकसामान्य पतिव्रता की मंजुल मूर्ति झूलने लगती है | उनके कथन – मात्र से हमारा हृदय आनंद विभोर हो उठता है | ----- हमारा हृदय रामकथा से इतना स्निग्ध, रससिक्त तथा घुल – मिल गया है कि हमारे लिए राम और जानकी किसी अतीत युग की स्मृति न रहकर वर्तमान काल के जीवंत प्राणी के रूप में परिणत हो गए हैं |" १

रामायण संस्कृत का आदिकाव्य है और महर्षि वाल्मीकि आदिकवि | रामायण की सार्वदेशिक और सार्वकालिक महत्ता का कारण है – राम और जानकी का पावन चरित्र | परवर्ती कवियों के लिए रामायण 'उपजीव्य काव्य' है तथा वाल्मीकि अमर प्रेरणास्रोत ! संस्कृत की आलोचना – परम्परा में रामायण 'सिद्धरस' प्रबन्ध कहा जाता है :-

" सन्ति सिद्धरसप्रख्या ये च रामायणादयः |" – (आनंदवर्धन)

रामायण के नायक विष्णु के अवतार हैं | लोक – कल्याणार्थ मानव रूप में उच्चादर्शों की स्थापना हेतु 'चरित्र' या 'धर्म' के पर्याय के रूप में कवि ने अपने काव्य – मंदिर में राम को प्रतिष्ठित किया |

तदनुरूप सीता भी एक दिव्य स्त्री हैं और श्रीराम की सहधर्मिणी के रूप में सम्पूर्ण नारी जाति के लिए अद्वितीय आदर्श स्थापित किया है | सीता का आदर्श चरित्र, अद्‌भुत शील और पतिव्रत धर्म भारतीय संस्कृति के चरम निदर्शन हैं | राम द्वारा अविश्वास किए जाने पर सीता ने प्रचंड स्वाभिमान के साथ अपना परिचय दिया :-

"अपदेशो मे जनकान्नोत्पत्तिर्वसुधातलात् |

मम वृत्तं च वृत्तज्ञ बहु ते न पुरस्कृतम् ||" २

सदाचार के मर्म को जाननेवाले देवता ! राजा जनक की यज्ञभूमि से आविभूर्त होने के कारण ही मुझे जानकी कहकर पुकारा जाता है | वास्तव में मेरी उत्पत्ति जनक से नहीं हुई है | मैं भूतल से प्रकट हुई हूँ | (अर्थात साधारण मानव – जाति से विलक्षण हूँ - दिव्य हूँ | उसी तरह मेरा आचार – विचार भी अलौकिक एवं दिव्य है | मुझमें चारित्रिक बल विद्यमान है, परन्तु) आपने मेरी इन विशेषताओं को अधिक महत्त्व नहीं दिया |'

आदिकाव्य में जानकी का शील आदिकवि की प्रतिभा का विलक्षण उदाहरण है पतिव्रत धर्म का चरमोत्कर्ष है तथा भारतीय नारी की पवित्रता का प्रतीक है |

रावण की लंका में प्रियतम से दूर भयाक्रांता सीता जहाँ दारुण दुःख सहकर पति मिलन की आशा में जीवित हैं और उनकी कुशलता के लिए पल- पल चिंतित और शोकाकुल वहाँ रामदूत हनुमान के प्रस्ताव को इस प्रकार अस्वीकार करती हैं –

" भर्तुभक्तिं पुरस्कृत्य रामादन्यस्य वानर |

नाहं स्प्रष्टुम् स्वतो गात्रमिच्छेयं वानरोत्तम || (सुंदर)

अर्थात् मैं स्वयं किसी भी परपुरुष का स्पर्श नहीं कर सकती | अनाथ होकर असमर्थ अवस्था में रावण का स्पर्श मुझसे हुआ | पति के लिए सीता के हृदय में अनन्य प्रेम और भक्ति भारतीय

पत्नियों के महान् आदर्श का प्रतीक है रावण के बार – बार प्रार्थना करने पर भी सीता के तिरस्कारपूर्ण वचन आर्य ललनाओं के सतीत्व के तेज को उद्भासित करते हैं | -

" चरणेनापि सव्येन न स्पृशेयं निशाचरम् |

रावणं किं पुनरहं कामयेयं विगर्हितम् ||" ३

अर्थात् निशाचर रावण से प्रेम करने की बात तो दूर रही मैं इसे अपने पैर से नहीं, नहीं बायें पैर से भी नहीं छू सकती |

सीता का दिव्यत्व उस प्रसंग में भी दर्शनीय है जहाँ इंद्र ब्रह्मा की आज्ञा से दिव्य खीर लेकर लंका में प्रवेश करते हैं और सीता से आग्रह करते हैं " शुभे ! रंभोरु यदि मेरे हाथ से लेकर इस हविष्य को खा लोगी तो तुम्हें हजारों वर्षों तक भूख और प्यास नहीं सताएगी |" ४

जानकी का प्रश्न उल्लेखनीय है –

" कथं जानामि देवेंद्रम् त्वामिहस्थं शचीपतिम् |"

(प्रक्षिप्त० / १६)

देवेन्द्र ! मैंने श्रीराम और लक्ष्मण के समीप देवों के लक्षण अपनी आँखों देखे हैं | यदि आप साक्षात् देवराज हैं तो उन लक्षणों को दिखाएँ |

(अरण्य, प्रक्षिप्त० १७)

देवता के लक्षण प्रकट किए जाने पर देवराज इंद्र को आदरपूर्वक वे निवेदित करती हैं –

"यथा मे श्वसुरो राजा यथा च मिथिलाधिपः |

तथा त्वामद्य पश्यामि सनाथो मे पतिस्त्वया" ||२१||

अर्थात् मेरे लिए जैसे मेरे श्वसुर महाराज दशरथ तथा पिता मिथिलानरेश जनक हैं, उसी रूप में मैं आज आपको देखती हूँ | मेरे पति आपके द्वारा सनाथ हैं | उन्होंने इंद्र के हाथ से खीर लेकर भक्तिपूर्वक श्रीराम और लक्ष्मण को अर्पित करते हुए करुणा से कहा –

" यदि जीवति में भर्ता सह भ्रात्रा महाबलः |
इदमस्तु तयोर्भक्त्या तदाश्नात् पायसं स्वयं" ||२४||

अर्थात् यदि मेरे महाबली स्वामी अपने भाई के साथ जीवित हैं तो यह भक्तिभाव से उनदोनों के लिए समर्पित है | तत्पश्चात् उन्होंने उस खीर को स्वयं ग्रहण किया |

सीता का त्याग और समर्पण किसे करुणाप्लावित नहीं करता ! पत्नीत्व और पतिव्रत की दिव्य आभा से दीप्त सीता को जब राम के द्वारा शंका की दृष्टि से देखा जाता है तब अनादृता नारी का विद्रोह और मर्मभेदी वाक्य दर्शनीय है –

"त्वया तु नरशार्दूल क्रोधमेवानुवर्तता |
लघुनेव मनुष्येष स्त्रीत्वमेव पुरस्कृतम् ||
न प्रमाणीकृतः पाणिर्बाल्ये बालेन पीडितः |
मम भक्तिश्च शीलं च सर्वं ते पृष्टतः कृतं ||" ५

'नृपश्रेष्ठ ! आपने ओछे मनुष्य की भाँति केवल रोष का ही अनुसरण करके मेरे शील का विचार छोड़कर केवल निम्नकोटि की स्त्रियों के स्वाभाव को ही आपने सामने रखा है | बाल्यावस्था में आपने मेरा पाणिग्रहण किया है, आपके प्रति मेरे हृदय में जो भक्ति और शील है, वह सब आपने पीछे ढकेल दिया |'

धन्य हैं माँ जानकी और धन्य है वाल्मीकि की लेखनी ! चरित्र ही मानवता की कसौटी है और चरित्र ही मानव को देवता बनाता है |

आदिकाव्य से प्रेरणा लेकर अनेकानेक काव्य नाटकों का सृजन हुआ | जिनमें भास, कालिदास और भवभूति की दृष्टि में सीता का चरित्र प्रस्तुत करना यहाँ अभीष्ट होगा | **भास के रामकथाश्रित नाटकों में सीता**-

भास कालिदास के पूर्ववर्ती संस्कृत के सर्वप्राचीन नाटककार हैं | भास की प्रशंसा स्वयं कालिदास ने अपने 'मालविकाग्निमित्र' नाटक की प्रस्तावना में किया है | 'प्रतिमा' और 'अभिषेक' भास के रामकथाश्रित नाटक हैं जिनका उपजीव्य भी रामायण है |

" अभिषेक नाटक में एक साधारण स्त्री की भाँति वे रावण पर जीत पाने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती हैं कि " हे ईश्वर अगर मैं अपने कुल के योग्य पातिव्रत्य से आर्यपुत्र को चाहती होऊँ तो उनकी विजय होवे |" ६

रावण – विजय के बाद लोगों के विश्वासार्थ राम सीता से स्वयं को अलग करते हैं | अभिप्राय जानकर सीता अग्नि में प्रवेश करती हैं | सीता को लेकर साक्षात् अग्निदेव प्रकट होते हैं और राम से निवेदन करते हैं -

" हे पुरुषोत्तम, हे राजेन्द्र सर्वलोकवन्दिता, अपापा, अक्षता तथा शुद्धा इस अपनी सीता को स्वीकार कीजिए |"

आप जनकात्मजा इस सीता को लक्ष्मी ही समझें, लक्ष्मी ही मनुष्य रूप धरकर आपके पास आई है |

राम स्वीकार करते हैं कि- ' हे अग्निदेव ! मैं सीता की पवित्रता को जानता हूँ | लोगों के विश्वसार्थ ही मैंने ऐसा किया है | ७

'प्रतिमा' नाटक में स्वयं राम सीता की प्रशंसा में कहते हैं –

"अल्पं तुल्यशीलानि द्वन्द्वानि सृज्यन्ते |"

विधाता समान शीलवाले जोड़े कम ही बनाते हैं |

सीता शील की प्रतिमूर्ति है | सीता के तेज से शत्रु रावण भी आश्चर्यचकित हुआ –

अहह ! अहोपतिव्रतायस्तेज |

" योऽहमुत्पतितो वेगान्न दग्धः सूर्यरश्मिभिः |

अस्या परिमितैर्दग्धः शप्तोऽसोत्येभिरक्षरैः || ८

अर्थात् वेग से आकाश में उड़ते हुए जो मैं सूर्य की संतप्त किरणों से नहीं जला, वही- मैं तुम्हारे गिने हुए अक्षरों (शाप देती हूँ) से झुलस गया |

अतः भास की सीता भी दिव्य आभा से संपन्न और श्रेष्ठ मानवी स्त्री के गुणों से महिमामंडित हैं |

कालिदास की सीता –

कालिदास संस्कृत के सर्वश्रेष्ठ नाटककार और कवि हैं | 'रघुवंशम्' महाकाव्य का उपजीव्य भी रामायण है | इस महाकाव्य में इक्ष्वाकुवंश के राजाओं का सुंदर वर्णन है | प्रजाकल्याण के लिए आत्मसुख का सर्वथा त्याग भारतीय नरेशों का परम कर्तव्य रहा है | सीता- परित्याग रामराज्य की प्रतिनिधि घटना है | रघुवंश के १४ वें (६१-६७ श्लोक) सर्ग में चित्रित राजाराम के द्वारा परित्यक्त सीता का चित्र तथा उनका राम को भेजा गया सन्देश अत्यंत भावपूर्ण, गंभीर तथा हृदयद्रावक है |

गर्भभार से श्रान्त सीता लक्ष्मण से पूछती हैं – 'क्या ऐसी विकट परिस्थिति में उनका परित्याग शास्त्रानुकूल है या इक्ष्वाकुवंश की मर्यादा के अनुरूप है ?'

"वाच्यस्त्वया मद्वचनात् स राजा वह्नौ
मम लोकवादश्रवणादहासीः श्रुतस्य किम् तत् सद्दशं कुलस्य || ९

(रघु० १४/२१)

परन्तु फिर वह संतोष करती हैं कि 'राम कल्याणबुद्धि ठहरे, अपने प्रिय पात्रों के कल्याण की कामना करने वाले हैं | वे मेरे लिए किसी अकल्याण वस्तु की क्या कभी कल्पना कर सकते है ? अतः मेरे ही प्राचीन पातकों का यह जागरूक फल है |'- १०

"कल्याण बुद्धेरथवा तवायं न कामचारो मयि शंकनीयः
ममैव जन्मान्तर पातकानाम् विपाक विस्फूर्जधुरप्रमेयः ||"

सीता के अंतिम निवेदन में कितना त्याग कितना संतोष है – 'राम राजा ठहरे और मैं एकाकिनी तपस्विनी | वे सामान्य प्रजा की तरह ही मेरा ध्यान रखें |'

अतः कविकुलगुरु कालिदास ने भी देवी सीता को अपार श्रद्धा देकर अपने काव्य में शीर्षासन दिया | सीता के चरित्र में यहाँ भी अद्‌भुत आदर्श, त्याग, तेज और समर्पण के ज्वलंत प्रमाण दिखाई देते हैं |

भवभूति की सीता –

'उत्तररामचरितम्' भवभूति का सात अंकों का सर्वश्रेष्ठ नाटक है | इसमें राम के लोकोत्तर उत्तरचरित्र का वर्णन है |

उत्तररामचरितं के सातवे अंक में पृथ्वी – भागीरथी के संवाद में सीता परित्याग की घोर निंदा है द्य शोक व्यक्त करती पृथ्वी के इस कथन में सीता के अलौकिक स्वरुप का दिग्दर्शन होता है –

" न प्रमाणीकृतः पाणिर्बाल्ये बालेन पीडितः |
नाहं न जनको नाग्निर्नानुवृत्तिर्न संततिः ||" ११

अर्थात् बाल्यावस्था में बालक (राम) के द्वारा परिगृहीत हाथ प्रमाण नहीं माना गया, न मैं (पृथ्वी) प्रमाण मानी गई, न जनक, न अग्नि, न सीता द्वारा राम का अनुवर्तन और न (गर्भस्थ) संतति का ही विचार किया गया |

सीता को समझाती हुई दोनों देवियाँ उनका बखान करती है – " जगत् के लिए मंगल के कारणरूप अपने को तुम क्यों गर्हित समझती हो ? जिसके साथ से हमदोनो की भी पवित्रता प्रकृष्टता को प्राप्त कर रही हैं |" (उत्तर० ७/८)

सीता के लिए राम शोकाकुल हैं | सीता के पृथ्वी देवी से गोद में स्थान देने की प्रार्थना सुनकर राम विलाप करते हुए मूर्छित हो जाते हैं –

"क्यों सीता का विलय हो गया ? हाय देवि ! हाय दंडकारण्य के वास के समय की प्रियसंगिनी | हाय चरित्र की देवता ! तुम अन्य लोक को चली गई हो ||" १२

अरुन्धती सीता की पवित्रता का प्रमाण पुरवासियों को देती हैं | अग्निदेव सिद्ध कर चुके हैं | ब्रह्माजी ने जिसकी प्रशंसा की है | सभी देवताओं ने स्तुति की | ऐसी सीता रामभद्र के द्वारा अंगीकार की जाए, इस विषय में आपकी क्या सहमति है ? फिर वह राम से अनुरोध करती है – "हे जगतत्पति रामचंद्र ! तुम सुवर्णमयी प्रतिकृति (प्रतिमा) की पवित्र प्रकृति (मूलभूत) प्रिया को धर्मानुसार यज्ञ में धर्मचारिणी नियुक्त करो |"

लक्ष्मण – संवाद में सीता का धैर्य एवं शील उल्लेखनीय है | लक्ष्मण स्वयं को अपराधी मानते है क्योंकि राम की आज्ञा से उन्होंने ही सीता को गर्भावस्था में वन में छोड़ा था |

" आर्ये एष निर्लज्जो लक्ष्मण प्रणमति |"

सीता उन्हें चिरंजीव होने का आशीष देकर इंगित करती है कि उनकी भ्रातृभक्ति अद्वितीय है|

"वत्स ! ईदृशस्त्वं चिरंजीव |" (उत्तर० ७)

अतः भवभूति के इस नाटक में भी सीता के अलौकिक और लौकिक दोनों स्वरूप का सुंदर संगम हुआ है |

हिंदी के आचार्य तथा महाकवि अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का 'वैदेही – वनवास' उत्तररामचरितम् के कथासूत्र से बहुत प्रभावित है |

रामचरित मानस में सीता – गोस्वामी तुलसीदास का मानस हिंदी साहित्य की कालजयी रचना है | रामकाव्य में मानस को जो लोकप्रियता मिली वह वर्णनातीत है | राम तुलसी के आराध्य देव हैं | सीता के चरित्र का इतना मर्यादित वर्णन अन्यत्र दुर्लभ है | सीता – राम के गुणकीर्तन और आदर्श उपस्थापन के लिए तुलसी ने सीता – परित्याग की घटना को अपने काव्य में आश्रय नहीं दिया |

तुलसी की आराध्या देवी सीता सभी लौकिक उपमाओं से परे हैं | कवि उनकी शोभा वर्णन में स्वयं को असमर्थ पाता है –

" सिय सोभा नहि जाइ बखानी |
जगदम्बिका रूप गुण खानी ||
उपमा सकल मोहि लघु लागी
प्राकृत नारि अंग अनुरागी ||"

अर्थात् सीता जगत् जननी हैं | उनकी उपमा लौकिक स्त्रियों को दी जाने वाली उपमाओं से नहीं दी जा सकती |

सीता के शील और गांभीर्य की अद्भुत छवि पुष्पवाटिका – प्रसंग में उद्धरणीय हैं | राम की अभिलाषा ह्रदय में संजोकर पार्वती से विनती करती हैं –

"मोर मनोरथु जानहु नीके |
बसहु सदा उर पुर सबही के ||
किन्हेंऊँ प्रकट न कारन तोही |
अस कही चरण गहे बैदेही || १५

कैसी अद्भुत लीला है | भगवान् शिव स्वयं राम को अपना ईश मानते हैं | पार्वती जिस सीता का रूप धारण कर राम की परीक्षा लेती हैं, वही सीता मानवी रूप में राम को वर रूप में पाने के लिए गौरी – पूजन कर पार्वती के चरण पकड़ती हैं |

वनगमन – प्रसंग में यद्यपि श्रीराम ने सीता को साथ न जाने के लिए बहुत समझाया | वन के दुर्गम मार्ग, हिंसक जीव, भयावह दृश्यों का वर्णन कर सीता को विमुख करने का प्रयास किया | परन्तु सीता पति की अनुगामिनी थीं | उनके नेत्र जल से भर गए और वे प्रिय वियोग की आशंका से व्याकुल हो उठीं | सास के पैर लगकर हाथ जोड़कर कहने लगीं – ' हे देवि ! मेरी इस बड़ी ढिठाई को क्षमा करें | मुझे प्राणपति ने वही शिक्षा दी है जिससे मेरा परम हित हो |

परन्तु मैंने मन में समझ कर देख लिया कि पति वियोग के सामान जगत् में कोई दुःख नहीं है |

" मैं पुनि समुझि दीखि मन माहीं | पति वियोग सम दुखु जग नाहीं ||"
" तुम्ह बिनु रघुकुल कुमुम बिधु सुरपुर नरक सामान ||"१६

सीता ने अपने दृढनिश्चय और अकाट्य तर्क से राम को निरुत्तर कर दिया | जानकी के स्थापित आदर्श और पति विहीन अबलाओं की स्थिति आज भी उतना ही प्रासंगिक है –

" जिय बिनु देह नदी बिनु बारी | तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी ||"

अपहृता सीता रावण की अशोक वाटिका में कैसे जीवित हैं, हनुमान के मुख से राम को दिए गए सन्देश में मर्मस्पर्शी ढंग से चित्रित हुआ है –

" नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट |
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट ||" १७

अर्थात् हे प्रभु ! आपका नाम दिन – रात पहरा देने वाला है, आपका ध्यान ही किवाड़ है | नेत्रों को अपने चरणों में लगाए रहती हैं, यही ताला लगा है, प्रिय प्राण जाएँ तो किस मार्ग से ?

सीताजी का दुख सुनकर, प्रभु के कमल नयन भर आए और वे बोले – मन, वचन और शरीर से जिसे मेरी ही गति (आश्रय) है उसे क्या स्वप्न में भी विपत्ति हो सकती है ६ तुलसी ने लिखा –

"सुनि सीता दुःख प्रभु सुख अयना |
भरि आए जल राजीव नयना ||
बचन काएँ मन मम गति जाही |
सपनेहुँ बूझिअ बिपति कि ताही || १८

नाना विघ्न – बाधाओं को पार कर राम सीता – मुक्ति हेतु लंका पर आक्रमण करते हैं युद्ध में उनकी विजय होती है | सीता को सादर लाया जाता है | राम कुछ नरलीला करते हैं | वनवास के क्रम में सीता की छाया मात्र ही उनकी संगिनी रही | वास्तविक सीता को सुरक्षार्थ उन्होंने अग्निदेव को समर्पित किया था | अतएव पुनर्प्राप्ति हेतु राम सीता की ओर रहस्यपूर्ण ढंग से कुछ कटु वचन कहे | सीता अभिप्राय जानकर प्रभु के वचनों को सिर – माथे चढ़ाकर लक्ष्मण को कहती हैं –

" प्रभु के बचन सीस धरि सीता |
बोली मन क्रम बचन पुनीता ||
लछिमन होहु धरम के नेगी |
पावक प्रगट करहु तुम्ह बेगी || १९

आज्ञा पाकर लक्ष्मण सजल नेत्रों से अग्रज की ओर देखने लगे | प्रभु का रूप देख कर अग्नि का प्रबन्ध किया | प्रज्वलित अग्नि देखकर सीता हर्षित हुई | निर्भीक भाव से लीलापूर्वक जानकी ने निवेदन किया –

" जौ मन बच क्रम मम उर माहीं |
तजि रघुबीर आन गति नाहीं ||
तौ कृसानु सब कै गति जाना |
मो कहुँ होउ श्रीखंड समाना || २०

'यदि मन वचन और कर्म से मेरे हृदय में श्रीराम को छोड़कर दूसरी गति नहीं है, तो अग्निदेव जो सबके मन की गति जानते हैं, मेरे लिए चन्दन के समान शीतल हो जाएँ |'

अग्नि में प्रवेश करते ही सीता की छाया मूर्ति और लौकिक कलंक जल कर भस्म हो जातें हैं | प्रभु के चरित्र को किसी ने नहीं जाना | देव, सिद्ध और मुनि आकाश में खड़े देखते हैं |

" धरि रूप पावक पानि गहि श्री सत्य श्रुति जग बिदित जो |
जिमि छीरसागर इंदिरा रामहि समर्पी आनि सो ||
सो राम बाम बिभाग राजति रुचिर अति सोभा भली |
नव नील नीरज निकट मानहुँ कनक पंकज की कली || २१

अर्थात् तब अग्नि ने शरीर धारण करके वेदों में और जगत् में प्रसिद्ध वास्तविक सीताजी का हाथ पकड़ उन्हें श्रीरामजी को वैसे ही समर्पित किया जैसे छीरसागर ने विष्णु भगवान को लक्ष्मी समर्पित की थी | वे सीताजी श्रीरामचंद्र जी के वाम भाग में विराजित हुईं | उनकी उत्तम शोभा अत्यंत सुंदर है | मानो नए खिले हुए नीलकमल के पास सोने की कली सुशोभित हो |

देवताओं ने हर्षित होकर फूल बरसाया | आकाश में डंके बजने लगे | किन्नर गाने लगे | विमानों पर चढ़ी अप्सराएँ नाचनें लगीं | कैसा नयनाभिराम अलौकिक दृश्य है –

" बरषहिं सुमन हरषि सुर बाजहिं गगन निसान |
गावहिं किंनर सुरबधू नाचहिं चढ़ीं बिमान || २२

देवताओं ने भगवान् राम की बारम्बार स्तुति की | स्वर्ग से दशरथ आए | प्रभु ने अनुज सहित वंदना कर पिता का आशीर्वाद लिया | स्वयं देवराज इंद्र जिनकी स्तुति कर भक्ति का वरदान माँगते हैं, उन युगल मूर्ति सीता – राम की दिव्यता का और क्या प्रमाण हो सकता है ?

"बैदेहि अनुज समेत | मम हृदयँ करहु निकेत ||
मोहि जानिए निज दास | दे भक्ति रमानिवास ||" २३

उपयुर्क्त विवेचन से स्पष्ट है कि सीता और राम सभी कवियों के पूज्य रहे | उनका आदर्श चरित्र उन कवियों के कथानकों को सुदृढ़ आधार दिया | कथानायक – नायिका का जीवन – संघर्ष कथावस्तु में गति एवं प्राण का संचार करता है | उनकी लक्ष्य – प्राप्ति कवि का मुख्य उद्देश्य होता है | विघ्नों पर विजय में नायक का चरित्रोत्कर्ष दीखता है और सामाजिकों के लिए एक लोककल्याणकारी आदर्श की स्थापना होती है |

'रामचरित मानस' इस दृष्टि से सर्वाधिक सफल और जनप्रिय महाकाव्य है | अपने आराध्य देव के महिमामंडन हेतु तुलसी ने सीता – निर्वासन के प्रसंग को 'मानस' में घटित नहीं होने दिया है | यह तुलसी की विलक्षण प्रतिभा और नारी विषयक भावना दोनों का ज्वलंत उदाहरण है | तुलसी का युग घोर अनाचार का युग था | हिन्दू धर्म खतरे में था | ऐसे समय में राम जैसे महानायक और लोकनायक के जीवन – चरित द्वारा व्यक्ति और समाज दोनों के महोत्थान का लक्ष्य कवि की दृष्टि में अधिक महत्वपूर्ण था | रामायण हमारा जातीय इतिहास है | अतः तुलसी ने अपने मानस को तुलनात्मक दृष्टि से अधिक निर्मल, निष्कलंक और श्रेष्ठ बनाया | सीता का सौन्दर्य - वर्णन हो या शील – वर्णन तुलसी ने जिस भक्ति श्रद्धा और मर्यादा का पालन किया वह अद्वितीय है | सीता तुलसी की दृष्टि में सदा अलौकिक आभा – संपन्न नारी हैं |

प्रस्तुत आलेख में संस्कृत और हिंदी दोनों साहित्य की प्रमुख रचनाओं के आधार पर सीता के दिव्यादिव्य चरित्र का समीक्षण किया गया है | जगात्जननी के विराट् चरित्र का दिग्दर्शन सामान्य दृष्टि से कहाँ संभव है ! सीता और राम परस्पर भिन्न नहीं, एकरूप हैं | संत तुलसी के ही शब्दों में -

कहँ रघुपति के चरित अपारा
कहँ मति मोर निरत संसारा ||

संदर्भ सूची :

१.संस्कृत साहित्य का इतिहास – बलदेव उपाध्याय, पृ० ३३

२. वाल्मीकि रामायण, युद्ध०, ११६/१५

३. तत्रैव, सुंदर, ५/२६/१०

४. तत्रैव, अरण्य, प्रक्षिप्त सर्ग १५,१६,१७

५. तत्रैव, युद्ध०, ११६/११४,१६

६. अभिषेक नाटक – भास, पृ० ९३

७. तत्रैव, ६/२०

८. प्रतिमोनाटक – भास, ५/२०

९. रघुवंश – कालिदास, १४/२१

१०. तत्रैव

११. उत्तररामचरित, भवभूति, ७/५

१२. तत्रैव पृ० ४२८

१३. तत्रैव पृ० ७/१९

१४. रामचरितमानस, तुलसीदास, बालकांड

१५. तत्रैव

१६. तत्रैव, अयोध्याकाण्ड, ६४

१७. तत्रैव, सुंदरकांड, ३०

१८. तत्रैव

१९. तत्रैव, लंकाकांड

२०. तत्रैव, लंकाकांड

२१. तत्रैव, लंकाकांड

२२. तत्रैव, लंकाकांड

२३. तत्रैव, लंकाकांड